विद्याभवन ,बालिका विद्यापीठ, लक्खीसराय

रूपम कुमारी ,वर्ग-दशम् ,विषय-हिन्दी 🌷

दिनांक- ३०/६/२०.

|| अध्ययन-सामग्री ||

बच्चों,

आज हम बालगोबिन भगत के शेष अंश को लेकर आए हैं- :.

आषाढ़ के रिमझिम में वर्षा में भगत कंठ से कबीर के पद निकलकर और ही सजीव हो उठते ।

धान के पानी भरे खेतों में बच्चे उछल रहे हैं । औरतें कलेवा लेकर मेड़ पर बैठी है । आसमान बादल से घिरा ;धूप का नाम नहीं । ठंडी पुरवाई चल रही है ।ऐसे ही समय अपने कानों में एक स्वर- तरंग झंकार सी कर उठी । यह क्या है ,यह कौन है ! यह पूछना ना पड़ेगा । बालगोबिन भगत समूचा कीचड़ में लिथड़े अपने खेत में रोपनी कर रहे हैं । उनकी अअंगुली एक -एक धान के पौधे को पंक्ति बद्ध , खेत में बिठा रही है ।उनका कंठ एक-एक शब्द को संगीत के जीने पर चढ़ा कर कुछ को ऊपर स्वर्ग भेज रहा है और कुछ को इस पृथ्वी की मिट्टी पर खड़े लोगों के कानों की ओर !

बच्चे खेलते हुए झूम उठते हैं; मेड़ पर खड़ी औरतों के होंठ कांप उठते हैं । वे गुनगुनाने लगते हैं , हलवाड़ों के पैर ताल से उठने लगते हैं । रोपनी करती उंगलियां एक अजीब क्रम से चलने लगती हैं ।

बालगोबिन भगत का यह संगीत है या जादू !

शेष कल ....

पाठ को पढ़ें व समझें तथा संबंधित प्रश्नों के उत्तर अपनी समझ के अनुसार दें -

- ***जीना शब्द का अर्थ बताएं ।।***
- ***पाठ के आधार पर यह बताएं कि बाल गोविंद भगत का स्वर कैसा था , वह कैसा गाते थे ?***
- ***धान रोपनी का सचित्र वर्णन करें ।***
- ***बाल गोविंद भगत अपने स्वर लहरी को कुछ ऊपर और कुछ खेत में काम कर रहे लोगों की ओर भेज रहे थे ,लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?***

आज हिन्दी के प्रसिद्ध कवि नागार्जुन का जन्म दिवस है , जिनकी दो रचनाएँ आपके किताब में संकलित है – फसल एवं दंतुरित मुस्कान । आप इसे जरूर पढ़ें ।

दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद
चमक उठी घर भर की आँखें कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद।

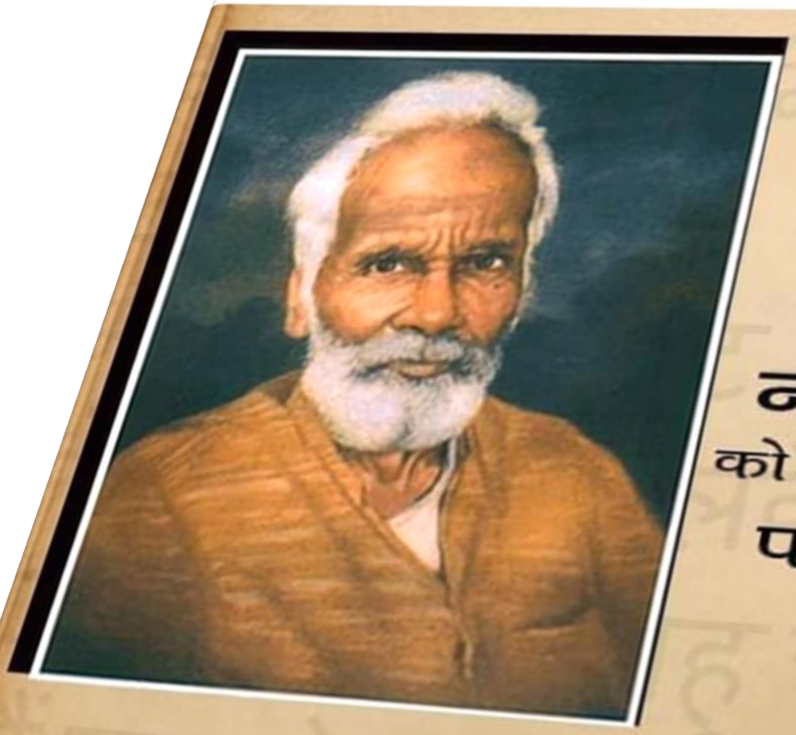

जनकवि
नागार्जुन
को उनके जन्मदिन
पर सलाम!

दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद
चमक उठी घर भर की आँखें कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद।